प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा दिनांक 15 अगस्त, 1983 को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र के नाम संदेश

भाइयों, बहनों, प्यारे बच्चों,

वर्षगांठ चाहे व्यक्ति की हो, चाहे देश की हो, एक शुभ अवसर होता है, खुशी का दिन होता है और हम सब चाहे यहां हों, चाहे अपने घरों में हों उसको मनाते हैं। पहले तो यहां से आवाज़ आकाशवाणी द्वारा ही हमारे प्रदेशों में जाती थी। पिछले साल कुछ बड़े-बड़े शहरों में दूरदर्शन द्वारा यहां का चित्र भी पहुंचा। आज और बहुत से छोटे शहरों में भी यह चित्र पहुंचेगा और देश के 70% क्षेत्र में दूरदर्शन पहुंचे वो कार्यक्रम आरंभ होगा। आहिस्ते-आहिस्ते हर काम इसी प्रकार से आगे बढ़ता है। आज वो दिन है जब हम अपनी आजादी की लड़ाई को याद करते हैं। वो महात्मा गांधी, उनके दूसरे साथी और शिष्य और कई ऐसे नाम जिनके बारे में आपने पढ़ा होगा, सुना होगा। लेकिन उनके अलावा देश में लाखों-लाखों की संख्या में बहुत से ऐसे बहादुर स्वतंत्रता सैनिक थे जिन्होंने अपना सब कुछ बलिदान कर दिया और इनमें से आज भी कुछ हजार हमारे साथ हैं। उन सबको हम याद करते हैं। और जब याद करते हैं तो यही सोचते हैं कि जो कुर्बानी उन्होंने दीं उससे हमने सबक क्या सीखा? कुछ ऐसे हैं लोग, जो कहते हैं कि हर साल लाल किले से चाहे कोई भी प्रधानमंत्री हो एक ही बात कहते हैं। क्या अजब बात है यह कहने की, क्या जो ऊंचे आदर्श हैं, जो चरित्र को बनाने वाली चीजें हैं, देश के मनोबल को उठाने की बातें हैं, देश की सुरक्षा की, देश की प्रगति की, देश की उन्नति और विकास की बातें हैं क्या वो हर बार कहनी नहीं हैं? क्या यह ऊंचे मूल्य जो हमारी विचारधारा के हैं वो कभी पुराने हो सकते हैं? और क्या उनको हर साल नहीं, हर दिन हमको याद नहीं करना है और अपने दिल में, अपने मन में उनको दोहराना नहीं है? यह केवल हमारे देश के लिए नहीं सभी देशों के लिए यह सत्य है। यह अवसर ऐसा नहीं है कि क्या क्या उपलब्धियां हुईं, क्या क्या बड़े छोटे काम हुए, क्या लोगों के, साधारण लोगों के जीवनस्तर किस प्रकार से ऊपर उठा, उस पर विस्तार से बोला जाये। ना समय है और न ही उचित है, लेकिन हमारी प्रगति कितनी हुई है यह सबकी आंखों के सामने है। हमारे देश वाले जानते हैं, विदेश वाले जानते हैं और आपने पढ़ा होगा कि बड़े-बड़े देशों के नेतागणों ने, विशिष्ट लोगों ने, इसके बारे में चर्चा की है और कर रहे हैं।

इसके माने नहीं कि हमारा काम पूरा हुआ है। इसके माने नहीं कि हमारे सारे स्वपन असलियत में हम बदल सके हैं। लेकिन इसके माने जरूर हैं कि उस रास्ते पर, जो रास्ता हमारे महान नेताओं ने हमको दिखाया, उस रास्ते पर हम आगे बढ़े हैं और चाहे कितने ही कष्ट आयें, कितने ही खतरे आयें, चाहे कभी हमने ठोकर भी खाई लेकिन हम आगे बढ़ते रहे। और बहुत से शायद आज के जो कष्ट हैं वो उसी के कारण हैं, तो यह देश जो गुलाम था, यह देश जो इतना गरीब था, यह देश जो डरा हुआ था, यह देश जो दबा हुआ था आज यह सिर ऊपर करके खड़ा हो सकता है। आप इसी एक साल की उपलब्धियां देखिए, कुछ तो बहुत बड़ी बड़ी चीजें हैं जैसे कि हमारे बिजली, बड़ी या छोटा उसको जो भी समझिए पहले केवल 300 शहरों में थी और गांवों में तो नहीं के बराबर। आज 3 लाख गांवों में है और शहरों में तो खैर है ही है। एक छोटा सा उदाहरण है, लेकिन सबको छूता हुआ।

बड़े कामों में मैंने आपको दूरदर्शन के बारे में बतलाया। हमारा अंतरिक्ष किस प्रकार से गया और किस प्रकार से हम उसका उपयोग कर सकते हैं अपने किसानों और दूसरों के लाभ के लिए वो भी आपके सामने है। बिजली घर हमारे ही इंजीनियरों ने पूरी भारतीय जानकारी के साथ खड़ा किया मद्रास के पास कल्पक्कम में। दो महीनों में एक दूसरा अंतरिक्ष आसमान में जाने वाला है। ये बड़े काम हैं लेकिन सब ऐसे हैं जिनका संबंध आपके जीवन से है, किसान के जीवन से, मजदूर के जीवन से, विद्यार्थी, विद्यार्थियों की शिक्षा से और गृहणी के प्रतिदिन के जीवन से। इस साल जबसे हम यहां पिछले दफे मिले, यहां पे ऐशियाई खेल भी हुए। यह नौजवानों का कार्यक्रम था। उसके बाद गुटनिरपेक्षता का सम्मेलन हुआ। वो भी भारत की एक उन्नति और भारत की क्षमता किस प्रकार से हम काम कर सकते हैं वो दुनिया को देखने का अवसर मिला। मैं अपने नौजवान खिलाड़ियों को बधाई देती हूं जिस प्रकार से उन्होंने हमारा सिर ऊपर रखा और इस वक्त मैं विशेषकर के उनको जो हमारी क्रिकेट टीम ने वर्ल्ड कप जीत के भारत का सम्मान बढ़ाया उनको भी बधाई देती हूं।

यह जैसे की आजादी की लड़ाई हुई, कुछ नाम ऊपर आकर के चमकते थे और सब उनको देखते थे वैसे ही यह नाम हैं जो चमकते हैं। लेकिन यह ना समझिये कि दूसरे लोग, दूसरे नौजवान, दूसरे बच्चे या हमारे किसान, हमारे मजदूर यह बधाई के पात्र नहीं हैं। अपनी अपनी जगह पे सब पसीने से मेहनत कर रहे हैं। अपनी अपनी जगह पे एक एक कदम करके भारत को आगे ले जा रहे हैं। उन सबको हम बधाई देते हैं। उनके नाम हम नहीं जानते हैं। उनको हमने देखा नहीं, उनकी शक्ल नहीं पहचानते हैं। लेकिन वो है भारत की नींव, भारत की बुनियाद। भारत के गरीब, भारत के जन-जातीय आदिवासी, भारत के हरिजन, पिछड़ी हुई जाति और सब जातियां। असल में मेरा विश्वास जातिवाद में नहीं है। मैं तो चाहूंगी कि यह शब्द हम हटा दें अपने देश से। हम सब अपने को एक माने। इस महान देश के महान नागरिक अपने को माने। क्योंकि आज के दिन जब हम उपलब्धियों की तरफ देखते हैं, सफलताओं की तरफ देखते हैं तो कमजोरी की तरफ भी देखना है। किन बातों ने हमको पीछे रखा है, कौन से रोड़े हमारे रास्ते में आये कि हम तेजी से हम आगे नहीं बढ़ सके? तो हम देखते हैं कि जो सबक आजादी की लड़ाई ने हमें सिखाया था कि केवल एकता और अनुशासन से सफलता प्राप्त हो सकती है। हम देखते हैं कि आज जाने या अनजाने कुछ ऐसे लोग हैं, कुछ ऐसे तबके हैं जो जाति के नाम पे समाज को चोट पहुंचाते हैं। धर्म के नाम से धर्म को ही धक्का पहुंचाते हैं। प्रांतीयता के नाम से देश को आघात करते हैं। यह है हमारी कमजोरी और एक और है कि अपनी हिम्मत हारी, आत्मविश्वास छोड़ दें, यह चीजें हैं जिन्होंने भारत को पीछे रखा है, भारत के मनोबल को कम किया है।

देश के अनेक भाग में हम देखते हैं कि आंदोलन हो रहे हैं। लोगों की मांगें हों ये लोकतंत्र में स्वभाविक है और हम हमेशा लोगों से बात करने को तैयार हैं। यथाशक्ति मांगों को पूरा करने के लिए तैयार हैं। लेकिन हमको हर समय यह भी देखना है कि एक की मांग पूरी करने से कहीं दूसरे को हानि ना पहुंचे। कहीं दूसरे की कमजोरी ना हो। इसलिए इन सब मांगों में सबसे बातचीत करनी है। सबके हित को देखना है। अगर सब पूरी तौर से संतुष्ट नहीं हो सकते तो कम से कम असंतोष तो कम करने की कोशिश करनी चाहिए।

ये आंदोलन जो होते हैं चाहे उनके नेता हिंसा चाहें, चाहे नहीं, हमने देखा है कि हिंसा आ ही जाती है। कौन करता है हमको नहीं मालूम। जब मालूम होती है तो उन लोगों को सजा भी मिलती है। उन लोगों को भी कभी कभी नहीं मालूम होता है। लेकिन उसके कारण देश को हानि होती है। विकास का काम रूक जाता है। जो विकास के नाम में आंदोलन चलते हैं वो ही विकास को रोक देते हैं। कुछ समस्याएं हैं जो हमारे संग चली आ रही हैं। आसाम की समस्या है। एक बड़ा अजब प्रचार उसके बारे में हो रहा है। वहां की कुछ बात जो है उसमें सच्चाई है, बाहर के लोग आए हैं। हमारी कोशिश है कि उनका आना रोकें और जो नाजायज तरीके से आये हैं, उनका परिचय करके उनको कुछ दूसरा प्रबंध करने की कोशिश करें। यह बात आज की नहीं। यह जब पहली दफे मैंने बातचीत की उसी समय यह बात मैंने वहां के लोगों के सामने रखी। लेकिन उन्होंने कहा कि या तो पूरी बात मानें और यहां ये जो करना चाहते हैं आप वो भी नहीं करने देंगे। तो जो काम हो सकता था इन सालों में वो काम रूक गया। अब उन्होंने कहा है कि नहीं शुरू कीजिए तो जो हमने पहले कहा था वो काम अब आरम्भ हो रहा है। उसके बारे में एक अजब कहानी और भी सुनने में आई। यह की वहां जो हमला हुआ और जिसमें बहुत से लोगों की हत्या गईं। मुसलमान हमारे भाई और बहन उनकी जानें भी गईं, उनके गांव भी जलाए गए और हिन्दुओं के भी, जन-जाति के लोगों की भी, हरिजनों के भी, मजदूरों के भी, जो बाहर से गए हुए बिहारी या उत्तर प्रदेशी मजदूर थे उनके भी। इन सबों पर जो हमला हुआ उसका खंडन भी मैं कर चुकी हूं और उन लोगों के प्रति सहानुभूति भी रखती हूं। लेकिन प्रचार क्या हो रहा है? प्रचार ऐसा हो रहा है जैसे हमारा हाथ हो इस मार काट में था। अगर उन लोगों के पास जाइए तो आपको स्पष्ट बताएंगे कि कौन उनके बचाव में लगा था, कौन उनकी रक्षा कर रहा था? यह सच है कि कहीं कहीं रक्षा में कहीं कहीं कमी हुई इसलिए वो मरे। ये तो है हमारी जिम्मेदारी लेकिन प्रचार इस प्रकार का हो रहा है जैसे हमने ये करवाया और बहुत से कौन लोग कर रहे हैं प्रचार। जिन्होंने स्वयं ऐसे भाषण दिए, ऐसा वातावरण बनाया, इस प्रकार से लोगों को उकसाया कि यह घृणा और हिंसा का वातावरण फैले।

आज पंजाब की भी समस्या है। मैं विस्तार में जाना नहीं चाहती हूं। अनेक बार उसके बारे में कहा है। हमारे देश में हमारी कोशिश रही है कि हर एक प्रदेश, हर एक कौम, हर एक क्षेत्र को न्याय मिले और देश की जो पूरी दौलत है, साधन हैं, उसमें वो भागीदार बने। जो भी मांगें मैं अपनी तरफ से पूरी कर सकती थी वो मैंने शुरू ही में मान लीं। लेकिन जिनका संबंध दूसरे प्रदेशों से है वो क्या उनके प्रति न्याय होगा अगर मैं कोई निर्णय ले लूं और उनसे समझौता ना हो सके। एक बात मैं याद दिलाऊंगी कि मुझसे कहा जा रहा है कि मैं निर्णय को जानबूझ के रोक रही हूं। अगर कोई भी प्रदेश, कोई भी कौम कमजोर होती है तो क्या केन्द्रीय सरकार को उससे लाभ हो सकता है? या वो केन्द्रीय सरकार की भी कमजोरी हो जाएगी? क्योंकि हमारी मजबूती हमारे प्रांतों की मजबूती पर निर्भर है। केन्द्र क्या है? क्या यह केवल दिल्ली शहर है? या दिल्ली में सेक्रेटेरियट है या प्रधानमंत्री का दफ्तर है? केन्द्र तो एक ऐसी जगह है जो सब लोगों को संग रख सकती है। देश की सुरक्षा जिसकी जिम्मेदारी है देश के सब लोगों को न्याय मिले, वो उसकी जिम्मेदारी है कि यह ना हो कि जोरदार है वो ज्यादा ले ले। चाहे व्यक्ति हो, चाहे प्रांत हो या कुछ और। लेकिन असली

ताकत हमारी तो प्रदेशों में है। जब कमी पड़ती है साधन की, तो उससे हम पर भी बोझ बढ़ता है। हमारे जितने मंत्रालय हैं उनके पैसे कटते हैं और उसी प्रकार से जो प्रदेश हैं उनके भी कटते हैं। इससे हमें खुशी नहीं है, लेकिन हम लाचार हैं। अगर अच्छी वर्षा हुई तो तस्वीर में परिवर्तन तुरंत आ जाता है। अगर सूखा पड़ा, बाढ़ हुई, आंदोलन जितने, इसमें रूपया इतना खर्च होता है इनको थामने में। यह चीजें अगर ना हों तो और भी तेजी से हम आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन जो बात मैं आपसे कह रही थी पंजाब के बारे में वो यह है कि करीब दो साल से यह समस्या मेरे सामने आई है, लेकिन सन 80 में हमारी सरकार आई उसके पहले मैं याद दिलाना चाहती हूं कि तीन साल तक जो लोग आज आंदोलन कर रहे हैं और मांगे उठा रहे हैं उनकी हुकूमत पंजाब में थी, उसी तीन साल उनके दो मंत्री केन्द्रीय सरकार में थे। उन तीन सालों में उनके सहयोगी जो उनके पड़ौसी प्रांत हैं वहां की सरकारों में थे। इसलिए पूरे तीन साल उनके सामने अवसर था कि वो इन अपनी समस्याओं का, अपनी मांगों को पूरा कर सकते थे मिलके। उस समय यह आवाज नहीं उठी। उस समय क्यों नहीं ये इन समस्याओं का समाधान हुआ? यह एक छोटा सा प्रश्न मैं उनसे और आप सबसे पूंछती हूं।

क्या वो दोषी नहीं है कि जब उनको ऐसा मौका मिला तब उन्होंने उस मौके का लाभ नहीं उठाया। क्यों? क्योंकि शायद उस समय भी जो वो चाहते थे वो नहीं मिल सकता था। तो सारा बोझ ठहरा कि हम आयें तो यह हमारे ऊपर डाला जाए। हम तैयार हैं अगर जो दूसरे लोग हैं जिनका संबंध इन प्रश्नों से है उनके संग वो बैठ के और समझौता कर सकते हैं। इसी प्रकार से और भी आवाजें देश के भीतर उठीं हैं जिससे हमें लगता है कि देश की मजबूती देश की एकता को खतरा हो सकता है। वैसे हमारे देश में एकता की भावना बहुत मजबूत है। एक और अजब बात गलत प्रचार एक हो रहा है। आसाम के बारे में मैंने आपको बतलाया। लेकिन सारे भारत में फैलाया जा रहा है। जब मैं अल्पसंख्या की बात करती थी तो ये कहते थे कि इनको वो केवल अल्पसंख्या की, माईनोरिटीज की, मुसलिम, सिख, इसाई इन लोगों की ज्यादा चिंता है और जो यहां अपार हमारी दूसरी हिन्दुओं की जनता है उसकी बिल्कुल चिंता नहीं है।

इसी संदर्भ में जब हिंदुओं की बात आई और मैं याद दिलाना चाहती हूं आपको कि हमारे देश में कहीं कोई बहुसंख्या में है और कहीं दूसरा बहुसंख्या में। कहीं पे कोई धर्म के लोग अल्पसंख्या में है और कहीं दूसरे धर्म के लोग अल्पसंख्या में हैं। तो अगर बात मैंने जो भी अल्पसंख्या का है या जिसका कोई प्रश्न है या दुख है वो उठाई तो अब यह नई इजाद कर ली कि इनको तो इनको तो अल्पसंख्या के माईनोरिटीज के लोगों की बिल्कुल भी चिंता नहीं है। यह तो वोट चाहती हैं जो बहुसंख्या के लोग हैं। सभी राजनैतिक दल चुनाव के समय वोट चाहते हैं। लेकिन इस लाल किले पे जब हम खड़े हैं और जब हम आजादी की लड़ाई को याद कर रहे हैं तो यह याद करें कि हम कैसे जमाने में पैदा हुए? कैसा जीवन गुजरा? किस कुर्बानी और सेवा के वातावरण में हमने कार्य किया और हमने, हमारी परम्परा ने हमें यह सिखया कि जीतने में खुशी होती है, हारने में कुछ दुख होता है। लेकिन जीतने और हारने के ऊपर भी कोई चीज है। वो अपना कर्तव्य करें, वो अपने देश की तरफ देखना और चाहे हम अपना काम पूरा ना कर सकें कम से कम जितनी हमारी ताकत है उतनी ताकत से हम उस रास्ते पर आगे बढ़ सकें।

आजादी की लड़ाई के दौरान में बहुत से लोगों की जानें गईं। बहुत से लोगों ने आजादी नहीं देखी। हम भी छोटे थे तो कल्पना भी नहीं की थी कि अपने जीवन में देख सकेंगे। लेकिन उसने हमारे कदम को हल्का नहीं किया, हमारे संकल्प को कमजोर नहीं किया। हमें मालुम था कि जहां तक हम पहुंचा सकेंगे हम पहुंचायेंगे और उसके बाद कोई और आगे बढ़ेगा। आज भी उसी भावना से हम विकास का काम का कर रहे हैं, उसी भावना से देश को मजबूत करने का काम कर रहे हैं। देश के सामने बहुत से खतरे हैं। अंदरूनी कमजोरियां तो हैं ही हैं। बाहरी खतरे भी हैं। मैं आपको डराना नहीं चाहती हूं और मुझे ये मालुम है कि आप डरने वाले भी नहीं हैं। लेकिन हम सबका कर्तव्य है कि स्थिति को पहचानें। संकट को हम जानेंगे तभी उसका सामना करने के लिए पूरी तैयारी हो सकती है।

आजकल साम्राज्यवाद पहले जैसा नहीं रहा। आज वो अपनी फौज लेके देश में नहीं आता है। आज वो छुपके अनेक प्रकार के दबाव डालता है। आर्थिक दबाव, राजनैतिक दबाव, दूसरे प्रकार के दबाव और वो फौजों से कुछ कम नहीं है। उससे भी ज्यादा खतरनाक है। क्योंकि साधारण लोग उनको पहचान नहीं सकते। बहुत से देशों में हमने देखा है क्या हुआ है। आजाद हैं लेकिन आजादी पर कुछ छाया भी पड़ गयी है। भारत यह नहीं चाहता। भारत का रास्ता स्पष्ट है। भारत का रास्ता है आत्मनिर्भरता, लोकतंत्र के द्वारा, समाजवाद के द्वारा, गुटनिरपेक्षता के द्वारा। कुछ लोग हमें कहते हैं कि इधर झुक रहे हैं, कोई कहते हैं उधर झुक रहे हैं। हम हर निर्णय भारत के हित को देखते हुए, विश्व शांति के हित को देखते हुए हम लेते हैं। कुछ लोगों से हमारी दोस्ती ज्यादा हो सकती है और कुछ से कम। लेकिन दोस्ती या मतभेद को हमने निर्णय लेने के रास्ते में कभी नहीं आने दिया। निर्णय हमारा एक सच्चा निर्णय होता है और अभी तक हमें जो सफलता प्राप्त हुई है हर क्षेत्र में वो इसी कारण की लोग जानते हैं कि यह आदर्शवादी देश है। इसके माने नहीं की सब आदर्श पूरे होते हैं। इसके माने नहीं की हम में बुराईयां नहीं हैं, गलतियां नहीं करते हैं।

दुर्भाग्य से भ्रष्टाचार की बात भी उठती है और हमें दुख से कहना होता है कि भ्रष्टाचार है लेकिन अगर इसको एक हम भूत बना देंगे और यह कहें कि है इसलिए और हो सकता है तो बहुत बहुत गलत बात होगी। हम हर एक को देखना है कि कैसे इस भूत को अपने बीच में से हटायें। दूसरे देशों में भी होता है। उनका जो जी चाहे करें, हमें चिंता नहीं है। हमको अपनी चिंता है और अपनी चिंता को दूर करने के लिए पूरा काम करना चाहिए। चाहे किसी भी क्षेत्र में हो। चाहे अफसरान हों, चाहे राजनीति में हों, चाहे साधारण दुकानदार या कोई दूसरे हों हम सबों को देखना है इस वक्त अपने लाभ और हित के ऊपर देखना है कि अपने छोटे से लाभ के लिए क्या हम सारे समाज को कमजोर करने को तैयार हैं ? क्या हम ऐसी स्थिति लाने को तैयार हैं जिसमें हमारे बाल बच्चों को नुकसान हो? यह चीज हर एक नागरिक को सोचनी है। महिलाओं के प्रति भी अत्याचार हो रहे हैं। कोई नई बात नहीं है। लेकिन अब समय आया है जब इसको बर्दाश्त नहीं करना है। समय आया है कि सारे समाज को इसको इस दृष्टि से देखना है कि ना महिला के प्रति अत्याचार होना चाहिए, ना पुरूष के प्रति अत्याचार होना चाहिए। लेकिन महिलाओं को शक्ति नहीं मिलेगी, हमारे नौजवानों को शक्ति नहीं मिलेगी, हमारे देश की जो रीढ़ की हड्डी के समान हैं उनको शक्ति नहीं मिलेगी। जो हमारे समाज के हाथ और पैर हैं भारत के मजदूर, उनको शक्ति नहीं

मिलेगी और जो तमाम लोग रहने वाले हैं चाहे वो किसी प्रदेश के हों, चाहे कोई भाषा बोलते हों, चाहे किसी भी धर्म का पालन करते हों, यह सब न्याय के पात्र हैं। और यह तभी मजबूत होंगे जब हर एक को न्याय मिले और यह न्याय, यह बड़ा काम केवल सरकार द्वारा नहीं हो सकता है। अफसरान द्वारा नहीं हो सकता है। यह तो हर एक नागरिक समझेगा की मैं इस देश का नागारिक हूं, ये मेरी भी उतनी जिम्मेदारी है क्योंकि इससे भविष्य बन रहा है और भविष्य अगर सुंदर नहीं हुआ तो मुझे हानि होगी, मेरी आती हुई पुश्तों को हानि होगी। यह भावना हमको आज देखनी है।

मैंने कहा अभी भी की हमारी सीमाओं पर भी खतरा, सीधा खतरा तो नहीं है लेकिन सारे विश्व में युद्ध की बातें हो रही हैं। भारत शांति प्रिय रहा है और इसीलिए गुटनिरपेक्षता का आंदोलन आरंभ करने में भी हमारा बहुत बड़ा हाथ रहा है। हम विशेषकर के अपने पड़ोसियों से दोस्ती चाहते हैं। अभी हाल में भी कुछ घटनाएं ऐसी हुई और मैं दोहराना चाहती हूं कि किसी भी देश में दखल हम नहीं देना चाहते। उनके अंदरूनी प्रश्न जो हैं उनको संभालना है। लेकिन अगर बड़े पैमाने पर हिंसा हो, हत्या हो, लूटमार हो तो उसका खंडन हमको करना पड़ता है और हमेशा ही हमने किया है।

हमारे पड़ोस में एक देश है जिससे बहुत घनिष्ठ संबंध भारत के रहे हैं-श्रीलंका। वहां जो बीता है उसमें भारत के नागरिकों पर भी बीता है, इसलिए हमारी वहां के बारे में विशेष चिंता है, दखल देने के ख्याल से नहीं, लेकिन मैत्री हमारी बनी रहे, संबंध हमारे बने रहें और हमारे जो लोग वहां पे हैं, हम तो नहीं चाहते कि किसी पर भी कुछ हानि हो लेकिन क्योंकि हमला हमारे ही लोगों पे हुआ है, हमारे नागरिक या हमारे देश के जो गये हैं तो उनकी विशेष चिंता और जो इसके, इस हिंसा के शिकार हुए हैं, उनके संग सहानुभूति हमें प्रकट करनी है। तो इस प्रकार लेकिन इन सब समस्याओं में से हमको बहुत समझ बूझ कर के चलना है जोश में आके एक कदम गलत पड़ता है तो उसकी हानि बहुत दूर तक होती है और फिर संभालना मुश्किल हो जाता है। यह ईश्वर की कृपा है कि अभी तक इन सब अंतरराष्ट्रीय मामलों में हम एक हैं। धीरज का रास्ता हमने लिया है और यही कारण है क्योंकि हमने समझने की कोशिश की, समझ बूझ के पैर आगे बढ़ाये, यही कारण है कि हमको सफलता मिलती है। हमको कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिए जिससे कि जो हम चाहते हैं उसी का उलटा हो, जिनका भला चाहते हैं उन्हीं को शायद हानि हो। बहुत देशों में भारत के लोग रहते हैं, कुछ वहां के नागरकि हो गये हैं और कुछ भारतीय नागरिक रहे हैं, उन सबका हमको जरा ध्यान देना है-दखल देने के ख्याल से नहीं लेकिन मानवता के ख्याल से और अगर जैसे मैंने पहले कहा कि किसी एक जाति या एक धर्म के बारे में चिंता की बात जो है, मुझे अगर चिंता है चाहे हिंदू, चाहे मुस्लिम, चाहे सिख या जो दूसरे अनेक धर्म भारत में हैं, तो इसलिए नहीं कि वो हिंदू, मुस्लिम या सिख हैं, लेकिन इसलिए कि वो भारत के नागरिक हैं, इसलिए कि वो इनसान हैं और आज दुनिया में ऐसी हालत हो गयी है, आर्थिक संकट, चुनौतियां सब जगह हैं, बेरोजगारी है। हां एक बात आपको कहना मैं भूल ही गयी, हमारी बेरोजेगारी बहुत बड़ी समस्या है, उसकी तरफ हम ध्यान देते आये हैं और हमने दो कार्यक्रम बनाये हैं। एक जो भूमिहीन हैं उनके लिए क्योंकि हमारे देश में सबसे गरीब वो वही हैं और बेरोजगारी का बोझ सबसे भारी उन्हीं के ऊपर पड़ता है। हम चाहते हैं कि हरेक

परिवार, उनके कम से कम एक सदस्य को रोजगारी मिले। यह कार्यक्रम तुरंत शुरू होने वाला है और उसके लिए एक बहुत बड़ी रकम अलग की है। महाराष्ट्र में यह चालू हुआ था और वहां सफल हुआ। इसलिए हम इसको सारे देश में फैला रहे हैं। लेकिन मैं आपको याद दिलाना चाहती हूं कि एक दम से हम हर एक तक नहीं पहुंच सकते। हमारी आशा है कि शुरू में करीब तीन लाख तक पहुंच सकेंगे और से जैसे जैसे सफलता मिलेगी और लोग इस स्कीम के अंतर्गत आ सकेंगे।

इसी प्रकार शहरों में सबसे बड़ा बोझ है शिक्षित नौजवान के ऊपर, इसलिए उनके लिए भी हमारी कोशिश है कि प्रति वर्ष दो या ढाई लाख ऐसे शिक्षित बेरोजगार नौजवानों को अपने पैरों पर खड़े होने के लिए हम साधन दें, तो इस प्रकार हर साल नये कार्यक्रम आरंभ होते हैं। हमारे बीस सूत्री कार्यक्रम का बहुत लोगों ने मजाक उड़ाया। लेकिन सच्चाई यह है कि उससे फरक पड़ रहा है, कहीं कहीं गलत काम भी हुए हैं, लेकिन आमतौर से उसका लाभ हुआ है, हो रहा है और आप अगर गांव में जाके देखिए तो आप देखिए बहुत से लोग जो यह बातें कहते हैं उनको याद नहीं या कभी पहले उन्होंने देखा ही नहीं था कि भारत का देहात कैसा था, भारत की गरीबी किस प्रकार की थी और यह संतोष की बात है कि वो चित्र अब हमेशा के लिए खत्म हो गया है। अब हम आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते ही जायेंगे। हम किसी से लड़ाई नहीं करना चाहते लेकिन आपको मालूम है कि आक्रमण क्योंकि हमपर हो चुका है, हमारा अनुभव जो है उसको हम भूल नहीं सकते हैं। इसलिए हमें तैयारी अपनी पूरी तैयारी रखनी है और एक शब्द मैं यह कहूंगी अपने बहादुर सेनाओं के अफसरान और जवानों को कि जिस बहादुरी से उन्होंने सीमाओं की सुरक्षा की उसी बहादुरी और उसी लगन से चाहे बाढ़ आये, चाहे दूसरी आपत्ति आये, शान्ति के समय भी वो उसी प्रकार से लोगों की सहायता करते हैं। वो भी हमारी बधाई के पात्र हैं। आज यह दिन है कि हम भूल जायें कि हम छोटे हैं या बड़े, कहां रहते हैं क्या हमारी विचारधारा है? हम यही सोचें कि हमारा जो पुराना या नया जो समझिये जो रास्ता है भारत को शक्तिशली बनाने का, भारत को महान बनाने का, उस रास्ते पर किस प्रकार से हम चलें।

आज के दिन मैं आप सबको फिर से बधाई देती हूं और विशेषकर के हमारे नौजवानों को, उनकी आखों में नयी आशायें हैं, उनके कंधों पे नई जिम्मेदारी है और उनके दिलों में नया जोश है, वो भावना हम सब में चाहे हमारी कुछ भी आयु हो और उस जोश से, उस हिम्मत से हम हरेक और जब हम हरेक कहती हूं तब उसमें मैं भी शामिल हूं। मैं भी आपके संग एक हूं। हम सब देश के सेवक और सेविकायें हैं। हमको ओहदे का नहीं सोचना चाहिए कौन धनी है, कौन करीब है यह नहीं सोचना चाहिए। केवल यह कि हमसे कमजोर है उसको कैसे सहायता करें। हमसे जो नीचे हैं, किसी कारण कोई फिसल गया है या किसी ने उसको धकेला है, उसको कैसे उठायें जिसमें पैर मिलाके, कंधे से कंधे हम आगे बढ़ें। इस देश को शक्तिशाली बनायें, इस देश को महान बनायें और केवल आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं, केवल राजनैतिक दृष्टिकोण से नहीं, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी, मन और बुद्धि के दृष्टिकोण से भी।

आइये हम सब आज यह निर्णय करें कि कोई बात हम न कहेंगे, न करेंगे जिससे किसी प्रकार से हमारा देश नीचे हो। हमें साधारण जनता का मनोबल बढ़ाना है, उनका आत्मविश्वास बढ़ाना है और आत्मनिर्भर देश को बनाना है, अपने लोगों को बनाना है। इस

नारे से आज हम यहां से जायें और अगले साल इस काम में हम लगें तो हम चमत्कार करके दिखा सकते हैं। एक बार नहीं अनेक बार भारत के लोगों ने दिखाया है कि भारत जब निर्णय करता है जब दृढ़ संकल्प करता है तो पूरा करके दिखा सकता है। आइये मेरे बहनों और भाइयों हम करके दिखायें।

मैं फिर से आप सबको नमस्कार करती हूं और भविष्य के लिए शुभकामनायें देती हूं।

यह हिंद (जन समूह... जय हिंद), जय हिंद (जन समूह... जय हिंद), जय हिंद(जन समूह... जय हिंद)।